Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue 1 - 2016

अवधी फाग में रसपरिपाक

डॉ0 सर्वेश कुमार मिश्र*

अवधी फागों में रसराज अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ विराजमान है। वे अपने समस्त अंगोपागों सहित बसन्त श्री की शोभा का आनन्द भोग कर रहे है। किन्तु श्रृंगार के साथ ही साथ अन्य समस्त रसों की भी अभिवृद्धि अवधी फगुहारों द्वारा विपुल मात्रा में की गई है। रुपमाधुरी के पान से लेकर बीत राग हो जाने तक के समस्त भाव फागों में अपने स्थायी एवं संचारी रुप में उपस्थिति है।

श्रृंगार रस के परिपाक में कुछ अधिक रुचि दिखाई पड़ती है। सौन्दर्य निरुपण से लेकर संयोग और वियोग के विविध अनुभव उन्मुक्त रुप में चित्रित है। श्रीराम और श्रीकृष्ण के नायक रुप में सौन्दर्य निरुपण के बहुत सारे फाग उपलब्ध है। स्त्री रुप धारण किए हुए नायको का स्त्री रुप में सौन्दर्य चित्रण एक अद्भुत छटा लिए हुए है। विष्णु, कृष्ण और ऊदल के स्त्री रुप धारण के प्रसंग मिलते है। इसमें कृष्ण के जनाना रुप का चित्र शिव प्रसाद सिंह ने निम्नलिखित रुप में खींचा है–

मोहन धरि रुप जनाना, चले बेंचै सहर बरसाना, हो चुरिया सहाना।

सतरंग सारी सबुज रंग चोली, चोली के भीतर धरे जोड़ा गोली, स्याम है खूबै सयाना।

वृज में पुकारैं धरे सिर डाली, राधे कहैं आवा हे चूड़ीवाली।

तनी चली चलौ हमरे मकाना, चुनि–चुनि के हमैं पहिराना, हो चुरिया सहाना।[1.]

इसी प्रकार उदल के स्त्री बनने संबंधी फाग–''ऊदल धारा वेष जनाना'' ''ऊदल डारी नाक छिदाई'' और ''फुलवा चौपड़ सेज बिछाई'' प्राप्त होते है।

राम एक पूर्ण नायक हैं। उनका मनोहारी चित्र द्विज छोटकुन ने कैसा खींचा है– (पृ0 02)

''राजत अति अवध बिहारी, आजु लख प्यारी।

माथे मुकुट किरीट देत छवि अलक अनूप संवारी।

मानहुँ चंचरीक गन हिलि मिलि, बैठे मकरन्द निहारी।

भौंह कमान बान तिलकावलि, भाल मनोज शिकारी।

अधर बिम्ब शुक नासि विदारत, तेहि केरि करत रखवारी।

झुलमुलात कुंडल कानन मँह, छांह कपोल मंझारी।

*एसो0प्रोफेसर, फ0अ0अ0 राज0स्ना0 महाविद्यालय, महमूदाबाद, सीतापुर।
E-mail Id: faagovtpgcollege@yahoo.in

वदन सरद ससि पूर निहारत, हम त्रास दिखावत भारी।

तड़ित वसत पीत वसन तन आद्राघन मद मारी।

द्विज छोटकुन उन अयन विराजत, रघुवंश सरोज तमारी।''[2]

नायिका के रुप सौन्दर्य निरुपण में तो ये कवि सिद्व हस्त हैं। ऐसे उपमान देखने को मिलते है कि कहिए मत। हावभाव के आंखों देखे बिम्ब मर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। राम खेलावन के एक डेढ़ताल में नायिका का मूर्तिवत चित्रण हुआ है—

''गोरी मोहनी सुरतिया तुम्हारी, विधना मानौ संचवा में ढ़ारी, सुरति तोरी प्यारी।

लम्बी लम्बी केस नागिन जइसे कारी, तेहि पर सोरहो सिंगार संवारी, नैना से मारिउ कटारी।

गलवा गोदाय मुख पनवा चबाये, दंतवा मा सोनवा कै किलिया जड़ाए।

नाक सुगना टोंट अनुहारी, मुख कोटि चंद्र उजियारी, सुरति तोरी प्यारी।'

द्विज छोटकुन की दृष्टि फुलवारी में विचरण करती हुई एक सुघर नारि पर पड़ती है—

''एक सुघरि नारि सुकुमारी, फिरै फुलवारी।

कुच कठोर, मुख मोरि हंसन दृगचपल चलाव निवारी।

गोरे बदन सजे सब अभरन, कटि नाजुक देत दिखारी।''[3]

नायक नायिका सौन्दर्य निरुपण के साथ ही साथ श्रृंगार के संयोग पक्ष का चित्रण भी बड़े खुलेमन से हुआ है। संयोगावस्था के ऐसे ऐसे चित्र उरेहे गये है कि उनका वर्णन करना सहज नहीं है—

''राधे किलकत छैल छबीली।

कुच कुंकम कंचुक बन्द टूटे, लटकि रही लट गीली।

बन्दन सिर ताटंक ग्रह पर, रत्न जटित मणि नीली।

रति गयंद मृगराज मुकुट पर शोभित किरन ढ़ोली।

मचेव प्रेम जमुना जल अन्तर, प्रेम मुदित रस झोली।''[4]

इसी प्रकार विरह दशा का पूरा पिटारा भरा पड़ा है। बसन्त आते ही प्रियतम के बिन प्यारी का मन उचट जाता है, वह चिन्ता ग्रस्त हो उठती है—

''दिन रतिया जिया घबड़ाते, सखी कारन कवन लखाते, स्याम नहिं आते।

की नाहीं उड़त अबीर फुहारे, का उहाँ नाही नाद उचारे, राग फाग नहिं गाते।''

वह पपीहे की आवाज सुनकर उसे अपशब्द कहती है—

''पापी पपीहा मरै न टरै, मोका बोली की गोली से मारा ला।

ऋतु बसन्त जब लागन लागे, हमरा भवनवाँ हम तजि भागे।

मैं विरहिन विरहा मे जरौं, मोका.................।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

सिव परसाद मोका न जलावों, पिया पिया बोली न सुनावो।

केहि विधि अब जिय धीर धरौं, मोका....।'' [5].

वात्सल्य रस के भी सभी अंगोपांगो का फाग में प्रचुर भण्डार है। श्री राम और श्री कृष्ण की बाल्यावस्था संबंधी बहुत सारे फाग प्रचलित हैं। चारो भाइयों का बचपन का दृश्य द्विज छोटकुन की आंखों में कुछ इस प्रकार बसा है–

''मन मुदित सकल महतारी, निरखि सुतचारी।

कौशिल्या कैकेई सुमित्रा, हिय हरषाय दुलारी।

बार–बार पय पान करावति, भरि बसन अनेकन बारी।

कवहुँ पलंग पौढ़ाय झुलावति, गावति राग पसारी।

कवहुँक लै उमंग मुख चूमति, घूमति निज भवन मझारी।''[6].

वात्सल्य के संयोग पक्ष की भांति वियोग पक्ष का चित्रण भी बड़ी मार्मिकता के साथ फाग साहित्य में हुआ है। राम वन गमन के समय अयोध्या का यह दृश्य सहज नहीं रहने देता–

''रोवै सारी अवध राम बन जाई।

भीतर रोवैं मात कौसिल्या, बाहर लोग लुगाई।

बैठि सुमित्रा महलन विलखैं, ज्यों बछरा बिन गाय रंभाई।

दारुण दुःख दियो विधना ने, विपदा सही न जाई।''[7]

अद्भुत रस का प्रतिनिधित्व करने वाले फागों की कमी नहीं हैं राम और कृष्ण की बाल लीलाओं में शिवजी के बाल रुप में उनकी बारात की शोभा में, मोहन की मुरली की मधुर तान में, सुदामा के द्वारिका से वापस

अपने घर पहुँचने पर, महाभारत में गीता उपदेश एवं विराट स्वरुप दर्शन में इस रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। कुरुक्षेत्र में श्री कृष्ण के विराट रुप का दर्शन अर्जुन को इस प्रकार हुआ–

''पारथ को धर्म नसायो, जबै हरि रुप विराट दिखायो।

ठावहिं ठाँव खड़े चतुरानन, विष्णु अनेकन जात गिनायो।

राजत रुद्र सो भूर कहूँ, भूत पिशाच निसान बजायो।

देवन वृन्द खड़े विचरैं, उचरैं स्वर वेदन गायो।''[8]

जब अद्भुत छटा बिखरती है तब अहं तिरोहित हो जाता है। ऐसी दशा में मै का भाव समाप्त हो जाता है और वह अर्थात् ईश्वर हृदय में वास करने लगता है। अन्तःकरण में भक्ति की लहरें उठने लगती है और मन सबकुछ त्यागकर उसी भगवान की शरण में पहुँच जाता है–

''हमरे राम नाम धन खेती।

पहिली खेती हमने कीनी, गंगाजी की रेती।

ज्ञान–ध्यान कै बैल बनायो, जब चाह्यो तब जोती।

राम नाम का बीज बनायो, उपजत हीरा मोती।

इस खेती में नफा बहुत है, बिरलै सुनकर चेती।''[9]

सांसारिकता से उसका मोह भंग हो जाता है और वह दिनरात राम के भजन में अपना जीवन व्यतीत करना चाहता है–

''भजु रामचन्द्र रघुनाथ वृथा जिंदगानी।

यह संसार असार सदा है, खोलहु नयन गुमानी।

देखि लेहु अपने मन मूरख, जिमि कमल पात कर पानी।''[10]

रौद्र, रस के कई कई प्रसंग फाग गीतों की विषय वस्तु है। जनकपुर में परशुराम, लंका युद्ध, महाभारत युद्ध सम्बन्धी फाग रौद्र रस के साभ–साथ वीर और भयानक रस के भी अनुभव कराते है। महाभारत युद्ध में कर्ण को सेनापति बनाये जाने के उपरान्त उनका रौद्र रुप देखते ही बनता है–

''गहेव कोपि करन कर मे कमान, रथ हाँकेव सल्यकुमारा, समर के मंझारा।

समरभूमि मा पहुँचेव जाई, बोलेव कर्ण कहाँ जदुराई, रोकव तेज हमारा।

हतौं तुम्हैं वैधौं को पारथ, अब देखौ हमरौ पुरुषारथ।

सनमुख होइ रोकौ कराल बान, करौं चूर घमण्ड तुम्हारा, समर के मंझारा।

प्रकट भयो है पार्थ तुरन्ता, गर्जेव रथ पर से हनुमन्ता, कांपि उठेव संसारा।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX XXXXXXXXXXX

सुनेव धनंजय कै यह बैना, कोपेव करन अरुन भये नैना, विसिख कराल निकारी।

सावन बूँद भाँति सर बरसत, भूत पिसाच खात मन हरषत।

जइसे उमड़े नदी वरषा रितु में, वइसे उमड़े लहू कै धारा, समर के मझारा।''

इसी प्रकार चक्रव्यूह में अभिमन्यु का युद्ध संबंधी यह फाग वीर रस से ओत–प्रोत है–

''रण कोपि गहेव अभिमनु पिनाक, देवन दिल धीर धरै ना, निरखि दोऊ सैना।

लहरत मुंड रुधिर सागर में, गिरत बाण अररात समर में, परत भार सम्हरै ना।

व्यूह मध्य अभिमनु पग धारे, सुभट अनेक द्वार पर मारे।

गये सतयें द्वार पै करत हाँक, कुरुपति उर चैन परै ना, निरखि दोऊ सैना।

मारु मारु सब बीर पुकारत, नाग समान बाण फुफकारत, वाहन पग ठहरै ना।

पारथ सुत दल करत संहारन, इत अकेल उत वीर हजारन।

कटि गिरत धरनि पै ध्वज पताक, सनमुख रन जोरि सकै ना, निरखि दोऊ सैना।

चारि तुरंग सारथी जूझेव, गहिरथ चक्र धनुष जब टूटेव, अरि दल देखि डरै ना।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

कुंवर हाथ में चक्र रथ को है, मानहु चक्र सुदरसन सोहै।

रवितनय द्रोण द्रोणी चलाक, सर से रवि देखि परै ना, निरखि दोऊ सैना।''

भीष्म प्रतिज्ञा का यह फाग बड़ा ही प्रभावोत्पादक है–

''रण आंगन में अटकी बतिया, राउर संग गिरिवर धारी, हमारी तुम्हारी।

गंगातनय करि कोप रिसाने, नर केहरी सरासन ताने, गरजत हैं ललकारी।

नृप विराट गांडीव धनुर्धर, सावधान रहेव हे राधा वर।

गहि राखेव स्यंदन की जोतिया, विचलय नही पावय मुरारी, हमारी तुम्हारी।

यह कहि लगे बाण वरसावन, मनहुं समर सागर में सावन, उमंगत दुनिया सारी।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

व्याकुल भयव पाण्डु के नन्दन, अरुण फुहारे लखि अपने तन, क्रोधित भयेव बनवारी।

रथ से उतरि चक्र करि धारन, निज प्रण छोड़ि चलेव जगतारन।''[11]

अंततः अभिमन्यु वध के उपरान्त उत्तरा के विलाप सम्बन्धी करुण रस एक दृश्य प्रस्तुत है–

''पति गति लखि विलखैं विराट लली, हमैं छाड़ेव प्रीतम प्यारा, तजे संसारा।

बिना जीव कठपुतरी जइसे, पाण्डव वधू विकल भई तइसे, जौ पति लास निहारी।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

जउने के पिया मरम ना पायौ, गरभ वास मा पिता पढ़ायौ, भूलि गयेव वहि बारा।

वह होइ गयव है मृत्यु कै कारन, दिहिन रमेसर दुख अपारन।

चलौचली दूनौ जने चिता पै जली, छूटै दुनियां से नाता हमारा, तजे संसारा।''[12]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अवधी फाग की भावभूमि अत्यन्त उर्वर है। उसमें समस्त रस अपने वैभव सम्पन्न स्वरुप में विद्यमान हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अवध मा होली खेलैं रघुवीरा–संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश–पृ0 130.
2. वही–पृ0 62.
3. वही–पृ0 63.
4. फाग मंजरी–श्री जनता बुक स्टाल कानपुर–पृ0 44.
5. चौताल चिर्री छब्बीसवाँ भाग–शिव प्रसाद सिंह–पृ0 6.
6. चौताल छोटकुन–द्विज छोटकुन–पृ0 2.
7. फाग मंजरी–पृ0 51.
8. अवध मा होली खेलैं रघुवीरा –पृ0 230.
9. वही–पृ0 341.
10. चौताल पचीसी–जाब प्रेस जालपा देवी त्रिभुहानी वाराणसी–पृ0 9.
11. चौताल का सिरताज–रामराज उपाध्याय –पृ0 4,5.
12. अवध मा होली खेलै रघुवीरा–पृ0 187.

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501